

चाहिए—नही खाता चाहिए कभी भी भोजन नहीं करना चाहिए ।
इसका वैसा ही पुण्य-फल होता है जोकि गंगा आदि तीर्थों में स्नान करने
से हुआ करता है ॥२०॥

Padma Purana, 2nd Svarga Khanda, Chp 19.

Edited/Translated by Pandit Sriram Acharya

Published by: Samskriti Sansthan, UP (1969)

॥ भगवान् का नाम-माहात्म्य ॥

श्रीप्रदं विष्णुचरितं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वपापक्षयकरं दुष्टग्रहनिवारणम् ॥१॥
विष्णुसान्निध्यदं चैव चतुर्वर्गं फलप्रदम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या चान्ते याति हरेर्ग्रहम् ॥२॥
नामोच्चारणमाहात्म्यं श्रूयते महद्दभुतम् ।
यदुच्चारणमात्रेण नरो यायात्परंपदम् ॥३॥
तद्वदस्वाधुना सूत ! विद्यानं नाम कीर्तने ॥४॥
शृणु शौनक ! वक्ष्यामि संवादं मोक्षसाधनम् ।
नारदः पृष्ठवान्पूर्वं कुमारं तद्वदामिते ॥५॥
एकदा यमुनातीरे निविष्टं शान्तमानसम् ।
सनत्कुमारं प्रपच्छ नारदो रचिताञ्जलिः ।
श्रुत्वा नानाविधान्धर्मान्धर्मव्यतिकरांस्तथा ॥६॥
योऽसौ भगवता प्रोक्तो धर्मव्यतिकरो नृणाम् ।
कथं तस्य विनाशः स्यादुच्यतां भगवत्प्रिय ! ॥७॥

श्रीशौनक मुनि ने कहा—भगवान् विष्णु का चरित श्री के प्रदान करने वाला है और सम्पूर्ण उपद्रवों के नाश करने वाला तथा समस्त पापों के क्षय को करने वाला एवं दुष्ट ग्रहों के निवारण करने वाला होता है ॥१॥ यह विष्णु का चरित भगवान् विष्णु के सान्निध्य को प्रदान करता है एवं चारों वर्गों का (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) फल प्रदायक होना है । जो कोई भी मनुष्य इसका ध्वषण किया करता है और भक्ति की भावना से इसे मुनता है वह मनुष्य हरि के गृह को अन्त में प्राप्त किया करता है ॥२॥ हे भगवन् ! भगवान् के शुभ नामों के मुख से

उच्चारण का बहुत अधिक माहात्म्य सुना जाता है जिसका एक महान् अद्भुत फल होता है जिसके केवल मुख से उच्चारण करने ही से मनुष्य परम पद की प्राप्ति हो जाया करता है ॥३॥ हे सूतजी ! अब आप कृपा करके भगवान् के शुभ नाम—कीर्तन के विषय में कुछ वर्णन कीजिए कि उसका क्या विधान है ॥४॥ सूतजी ने कहा—हे शौनक ! आप मुनिये, मैं मोक्ष के साधन करने वाला एक सम्वाद आप को बतलाता हूँ । पुराने समय में एक बार देवर्षि नारद जी ने कुमार से पूछा था । वही मैं इस समय में आपको बतलाता हूँ ॥५॥ एक समय में यमुना के तट पर आसन जमाकर बैठे हुए और परम शान्त मन वाले सनत्कुमार जी से नारदजी ने अपने दोनों हाथों को जोड़कर बहुत ही विनम्र भाव से पूछा था । इसके पूर्व वे अनेक प्रकार के धर्मों के व्यक्तिकरों का श्रवण कर चुके थे ॥६॥ श्रीनारदजी ने कहा—आपने जो मनुष्यों के लिए धर्म का व्यक्तिकर वर्णन किया है हे भगवान् के परम प्रिय ! उसका विनाश किस प्रकार से होता है इसे अब आप अनुग्रह करके बताइये ॥७॥

शृणु नारद ! गोविन्दप्रिय ! गोविन्दधर्मवित् ! ।

यत्पृष्ठं लोकनिर्मुक्तिकारणं तमसःपरम् ॥८॥

सर्वचारविवर्जिताः शठधियो व्रात्या जगद्वश्रका ।

दम्भाहङ्कृतिपानपैशुनपराः पापाश्च ये निपटुराः ॥९॥

ये चान्ये धनदारपुत्रनिरताः सर्वेऽधमास्तेऽपि हि ।

श्रीगोविन्दपदारविन्दशरणाः शुद्धा भवन्ति द्विज ! ॥१०॥

तमपि देवकर कहराणकर स्थविरजगममुक्तिकर परम् ।

अतिचरन्त्यपराधपराजनाय इह तान्हरिनाम पृतातिहि ॥११॥

नामश्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येव स नामतः ।

नाम्नो हि सर्वं सुहृदो ह्यपराधात्पतत्यधः ॥१२॥

के तेऽपराधा विप्रेन्द्र ! नाम्नो भगवतः कृताः ।

विनिष्पन्ति नृणां कृत्यं प्राकृतं ह्यानयन्ति च ॥१३॥

श्री सनत्कुमारजी ने कहा—हे नारद ! तुम श्रवण करो । आप ही स्वयं सदा भगवान् श्रीगोविन्द के परम प्रिय भक्त हो और गोविन्द के

धर्म के पूर्ण ज्ञाता भी हो । आपने इस समय में जो भी कुछ मुझमें पूछा है वह लोगों के निर्मुक्त होने के कारण से ही अन्धकार के नाश करने वाला ही प्रश्न किया है ॥८॥ हे द्विज ! जो मनुष्य सभी प्रकार के सदाचारों में रहित होते हैं और जिनकी बुद्धि में झटता कूट-कूट कर भरी होती है तथा महान् आत्म एव जगत के वशक हुआ करते हैं । जिनमें दम्भ—अहंकार—मदिरा पान—पिशुनता भरी होती है और अहर्निश इन्हीं दुर्गुण—दोषों में परायण रहा करते हैं । जो महान् घोर पापाचरण करने वाले एवं निर्दयी निष्ठुर हुआ करते हैं और दूसरे भी लोग जो रात दिन अपने ही धन—द्वारा और पुत्रादि में निरत रहा करते हैं वे सभी महान् अधम पुरुष ही होते हैं । यदि ऐसे भी पुरुष गोविन्द के चरणों की शरण में आजाते हैं तो परम विशुद्ध हो जाया करते हैं ॥९-१०॥ ऐसे भी घोर पापी को भगवान् श्री हरि का नाम पवित्र कर दिया करता है । परम अपराधों में तत्पर रहने वाले लोग भी देव बना देने वाले—कृष्ण के आकर और स्थावर तथा जगम सब को मुक्ति देने वाले भगवान् के नाम का आश्रय ग्रहण करके उद्धार को प्राप्त होजाया करते हैं ॥११॥ भगवान् के शुभ नाम का आश्रय यदि किसी भी प्रकार से किसी भी समय में हो जाता है तो वह केवल हरि नाम से ही तर जाया करता है । सबका कल्याण करने वाले नाम का यदि कोई अपराध किया करता है तो उसका अधः पतन हो जाता है ॥१२॥ श्रीनारद जी ने कहा—हे विप्रेन्द्र ! शृपा कर सर्व प्रथम यही बतलाइये वे नामापराध कौन से होते हैं जो भगवान् के नाम के भी हुआ करते हैं और जिनका ऐसा प्रभाव होता है कि मनुष्यों के शृणुओं का निहनन हो जाता है और उन्हें एव प्राकृत जैसा बना दिया करते हैं ॥१३॥

सता निन्दा नाम्न. परममपराध बुधजना,
वदत्येता वतुं न खलुमनुजः कोऽपि यतने ॥
शिवस्य श्रीविष्णोयं इह गुणरामादि सकल,
प्रिया भिन्न पद्मेयं यलु हरिनामाहितकरः ॥१४॥

गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दन तथाऽर्थवादो हरिनाम्निकल्प्यते ।

नामापराधस्य हि पापबुद्धेर्न विद्यते तस्य यमैर्हिशुद्धिः ॥१५॥

धर्मव्रतत्यागहृतादि सर्वं शुभक्रियासाम्यमपि प्रमादः ।

अश्रद्धानोविमुखोऽप्यश्रृण्वन्यश्चोपदेशः शिवनामापराधः ॥१६॥

श्रुत्वाऽपि नाम माहात्म्यं य प्रीतिरहितोऽधमः ।

अहं ममादि परमो नाम्नि सोऽप्यपराधकृत् ॥१७॥

एवं नारद शङ्करेण कृपया मह्यं मुनीनां परं,

प्रोक्तं नाम सुखावहं भगवतो वक्ष्ये सदा यत्नतः ।

ये ज्ञात्वाऽपि न वर्जयन्ति सहसा नाम्नाऽपराधान्दश,

क्रुद्धा मातरमप्यभोजनपराः खिद्यन्ति ते बालवत् ॥१८॥

अपराधविमुक्तो हि नाम्नि जप्ते सदाचर ! ।

नाम्नैव तव देवर्षे ! सर्वसेत्स्यति नान्यतः ॥१९॥

श्री सत्सङ्गार जी ने कहा—हे बुधजनो ! सब से प्रथम तो नामोच्चारण करने वाले पुरुष के द्वारा यही अपराध बतलाया गया है कि सत्पुरुषों की निन्दा करना महान् नाम का एक अपराध होता है । नाम लेने वाले भी पुरुष इसको किया करते हैं और कोई भी मनुष्य इसके त्याग करने का यत्न नहीं करता है । इसके करने से नाम का बड़ा भारी अपराध होता है । दूसरा अपराध यह है कि भगवान् शिव तथा भगवान् विष्णु के गुण नाम आदि सब में भेद बुद्धि रख कर देखा करते हैं एक भगवान् के नामों में भी भेदभाव रखते हैं । यह नाम का बड़ा अहित करने वाला अपराध होता है । इसका भी नाम लेने वाले पुरुष को त्याग देना चाहिए ॥१४॥ तीसरा अपराध अपने गुरु की किसी भी रूप में अवज्ञा कर देना होता है । चौथा अपराध श्रुति एवं शास्त्रों की निन्दा करना होता है । पाँचवाँ अपराध यही होता कि जो श्रीहरि के नाम का माहात्म्य बतलाया जाता है उसे अर्थवाद की कल्पना का समझना या कथन करना । जो पाप बुद्धि वाला मनुष्य होता है उसके द्वारा किए हुए नानापराधों की शुद्धि यमराज के द्वारा भी नहीं होती है ॥१५॥ धर्म—व्रत—त्याग—होम आदि समस्त शुभ क्रियाओं की समता

भी प्रमाद ही होता है जो थड़ा नहीं रखने वाला एव विमुख है वह भी यदि नहीं सुनता है तो यह शिव नाम का अपराध होता है ॥१६॥ नाम के माहात्म्य को सुन कर भी जो पुरुष प्रीति से रहित होता है वह महान् अधम पुरुष होता है । मैं और मेरा—इसी में जो रातदिन भरा रहता है वह भी नाम में अपराध करने वाला ही होता है ॥१७॥ हे नारद ! इसी प्रकार में भगवान् शंकर ने मुनियों का भी परम यह नामापराध मुझको बतलाया था और मदती कृपा की थी । नामापराध का त्याग भगवान् को सुख प्रदान करने वाला है । अतएव इसे सदा यत्न से वर्जित कर ही देना चाहिए । जो जानकर भी इन दश नामापराधों को नहीं त्यागते हैं वे सर्वदा मात से भी क्रुद्ध होकर भोजन न करने वाले बालको की भाँति दुःखित रहा करते हैं ॥१८॥ इन अपराधों से विनि-मुक्त होकर ही नाम का जाप करने पर हे देवर्षे ! केवल इस एकमात्र नाम से ही तुम्हारा सम्पूर्ण कल्याण हो जायगा । अतः इसी का सदा समाचरण करो ॥१९॥

सनत्कुमार ! प्रियसाहसाना विवेकर्वाराग्यविवर्जितानाम् ।
 देहप्रियार्यात्मपरायणानामुक्तापराधाःप्रभवन्ति न.कथम् ॥२०॥
 जाते नामापराधे तु प्रमादेन कथञ्चन ।
 सदा सङ्कीर्तयन्नाम तदेकशणो भवेत् ॥२१॥
 नामापराधयुक्ताना नामान्येव हरन्त्यघम् ।
 अविश्रान्तिं प्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि यत् ॥२२॥
 नामकं यस्य चिह्नं स्मरणपथगत श्रोत्रमूल गतं वा ।
 शुद्धं वाऽशुद्धवर्णं व्यवहिनरहितं तारयत्येव सत्यम् ॥२३॥
 तच्चेद्देहद्रविणवनितालोभपाखण्डमध्ये ।
 निक्षिप्तस्यान्नफलजनक शीघ्रमेवात्र विप्र ! ।
 इदं रहस्य परम पुरा नारद ! शङ्करात् ।
 श्रुतं सर्वाशुभहरमपराधनिवारकम् ॥२४॥
 विदुर्विष्णुवभिधान ये ह्यपराधपराभराः ।
 तेषामपि भवेन्मुक्तिःपठनादेव नारद ! ॥२५॥

नाम्नो माहात्म्यमखिलं पुराणे परिगोयते ।

ततः पुराणमखिलं श्रोतुमर्हसि मानद ! ॥२६॥

पुराणश्रवणे श्रद्धा यस्य स्याद् भ्रातरन्वहम् ।

तस्य साक्षात्प्रसन्नः स्याच्छिवो विष्णुश्च सानुगः ॥२७॥

श्री नारदजी ने कहा—हे सनत्कुमार जी ! जिन को साहस प्रिय है और जो विवेक तथा वैराग्य से भी रहित हैं, जिनको अपना ही देह, अर्थ और सब कुछ प्रिय होता है वे मुक्तापराध क्यों नहीं होते हैं ॥२०॥ सनत्कुमार जी ने कहा—किमी भी प्रकार से प्रमाद वश नाम का अपराध हो जाने पर उससे छुटकारा पाने के लिए मन्वा नाम का सकीर्तन करते हुए एक बार ही अशन करने वाला होना चाहिए ॥२१॥ जो पुरुष नामापराध किया करते हैं उनके इस अघ का विनाश भी नाम के द्वारा ही होता है । निरन्तर विना क्षणमात्र को भी विधाम लिये नामोच्चारण करते रहने से ही वे ही भगवान् के शुभ नाम लाभदायक हुआ करते हैं ॥२२॥ केवल एक ही भगवान् का नाम जिसका चिह्न स्मृति के मार्ग में प्राप्त होगया हो अथवा श्रोत्रो के मेल में पड़ जावे, चाहे वह शुद्ध हो या अशुद्ध ही हो अर्थात् जिसके वर्णों में पूर्ण शुद्धि न हो किन्तु व्यवधान से रहित हो वह मत्स्य रूप में तार दिया करता है ॥२३॥ हे विप्र ! उन भगवान् के शुभ नाम का ऐसा महान् महत्त्व है कि वह देह द्रविण-वनिता-लोभ और पापण्ड के मध्य में भी लिया जाता है तो यहा शोध ही फल प्रदान करने वाला होता है । हे नारद ! यह परम रहस्य पहिले मैंने भगवान् शंकर से श्रवण किया था । यह परम रहस्य समस्त अशुभो वा हरण करने वाला तथा अपराधो वा निवारण करने वाला है ॥२४॥ जो केवल भगवान् विष्णु के ही नाम में तत्पर होते हैं वे भी अपराध पराधण मनुष्य हुआ करते हैं । हे नारद ! उन पुरुषों को भी पठन करने ही में मुक्ति होजाती है ॥२५॥ भगवान् के नामों वा पूर्ण माहात्म्य पुराणों में गाया जाता है । अतएव पुराणों में सभी का श्रवण करना ही चाहिए ॥२६॥ हे भ्रात ! जिसकी पुराणों के श्रवण करने में थका होनी है और प्रतिदिन जो

श्रवण किया करता है उस व्यक्ति पर भगवान् शिव तथा विष्णु अपने अनुगों के सहित पूर्ण प्रसन्न हुआ करते हैं ॥२७॥

यत्स्नात्वा पुष्करतीर्थे यागे सिन्धुसङ्गमे ।

तत्फलद्विगुण तस्य श्रद्धया वै शृणोति यः ॥२८॥

ये पठन्ति पुराणानि शृण्वन्ति च समाहिताः ।

प्रत्यक्षरं लभन्त्येते कपिलादानजफलम् ॥२९॥

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।

विद्यार्थी लभते विद्या मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ॥३०॥

ये शृण्वन्ति पुराणानि कोटिजन्माजित खलु ।

पापजालं तु ते हित्वा गच्छन्ति हरिमन्दिरम् ॥३१॥

पुराणवाचक विप्रं पूजयेद्भुक्तिमावनः ।

गोभूहिरण्यवस्त्रैश्च गन्धपुष्पादिभिर्मुने ॥३२॥

दद्याद्यो पुस्तकं भक्त्या स गच्छेद्धरिमन्दिरम् ।

बुवंति विधिनाशनेन सम्पूर्णं पुस्तकं च ये ॥३३॥

तेषां नामानि लिम्पेत चित्रगुप्तोऽर्चनाद् द्विज ॥३४॥

जो पुष्कर तीर्थ में स्नान करके, प्रयाग तथा गिन्धुओ के संगम में स्नान करके पुण्य-फल प्राप्त होता है उस पुण्य-फल में भी दुगुना पुण्य-फल उसे प्राप्त होता है जो श्रद्धा एवं भक्ति भाव में इसका श्रवण किया करता है ॥२८॥ जो मनुष्य पुराणों का पाठ किया करते हैं अथवा धारणत समाहित होकर पुराणों का श्रवण किया करते हैं उनको प्रत्येक भक्षर के पठन एवं श्रवण में एक-एक कपिला गो के दान में समुद्रप्र होन वाला पुण्य-फल हुआ करता है ॥२९॥ जिसके पुत्र नहीं होता है वह पुत्र की प्राप्ति किया करता है और धन की इच्छा पाना पुरुष धन का लाभ प्राप्त करता है । विद्या का अभिवादी विद्या पाना है और जो साक्षात्क जन्म-मरण चक्रों आगमन में लुटकारा प्राप्त करने की लालसा बाग्य अत्यन्त ही मोक्ष की प्राप्ति किया करता है ॥३०॥ जो मनुष्य पुराणों का श्रवण किया करते हैं वे करोड़ों जन्मों में मन्वित किया हुआ पाप विच्छेद हो राग्य करके हरि के मन्दिर में समन दिया करते

हैं ॥२१॥ जो पुराणों का वाँचने वाला ब्राह्मण हो उसका पूजन बहुत ही भक्ति की भावना से करना चाहिए । हे मुने ! उस ब्राह्मण को गो-भूमि—मुन्यर्ष और वस्त्र तथा गन्धाक्षत पुष्पादि से भली भाँति पूजन करे ॥२२॥ जो पुराण पुराण की पुस्तक का दान किया करते हैं और भक्ति पूर्वक विद्वान् ब्राह्मण को दिया करते हैं वे श्रीहरी का निवास लाभ करते हैं इनविधि विधान से जो सम्पूर्ण पुस्तकों का यजन—पठन—ध्वज तथा दान करते हैं उनके शुभ नामों को अर्चन में चित्र गुप्त लिम्पित कर दिया करते हैं ॥२३-२४॥

॥ प्रतिज्ञा पालन का महाफल ॥

श्रोतुमिच्छामि ते प्राज्ञ ! कथयस्व समूलकम् ।

प्रतिज्ञापालने पुण्यं खण्डने किं च कित्वपम् ॥१॥

अनृते शपथे किं वा सत्ये किञ्चिद्भवेन्मुने ।

वधिष्य किं कर दत्त्वा कृपा कृत्वा कृपार्थम् ॥२॥

शृणुष्व मुनिशार्दूल ! कथयामि समूलतः ।

चण्णवाना त्वमग्न्योऽसि सर्वलोकहितैरतः ॥३॥

धेनूना तु दात दत्त्वा यत्फलं लभते नरः ।

तस्मात्प्रोक्तिगुणं पुण्यं प्रतिज्ञा पालनेद्विज ॥४॥

प्रतिज्ञाखण्डनान्मूढो निरग याति दारुणम् ।

शतमन्यन्तर यावत्पच्यते नात्र मणयः ।

ततोभ्य जन्म चासाद्य निर्धनस्य निवेतने ॥५॥

अतनवस्त्रंविहीनः स्यात्बलेशो चापि स्वयमंणा ॥६॥

सत्येन शपथं कुर्याद्वाग्निगुरुसन्निधौ ।

तावद्दहति चे गात्रं विष्णोर्विशो न लुप्यते ॥७॥

मिथ्याया शपथं विप्रं किमहं यच्चिं साम्प्रतम् ।

शतमन्यन्तर विप्रं निरय मिथ्याया किम् ॥८॥

श्रीनर मुनि ने कहा—हे प्राज्ञ ! हम लोगों की अत्यन्त उत्कट इच्छा है मूल सहित ध्वज बनने की, आप कृपा करके वर्णन करें कि